धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जुलाई - अगस्त - 2011

* पाठकों की सेवा में
* सुन्दर साधवी
* स्वास्तित्व यज्ञ
* मनुष्यात्मा के पतन का सत्य ज्ञान वा सत्य बोध
* आत्मिक पतन का पहला वा दूसरा लक्षण
* हर अंग की अलग जरूरत
* मसले हल करो सही जगह पर
* श्री अकबरपुर की यात्रा

पाठकों की सेवा में

पाठकगण! यह अंक जुलाई और अगस्त का इकट्ठा छप रहा है, क्योंकि प्रतिवर्ष की तरह 2 महीने के लिए हम बाहर जा रहे हैं, तो वहां से यह छपना मुमकिन नहीं, इसलिए, जुलाई अगस्त का अंक इकट्ठा छापा जाता है। जुलाई का महीना साथी सेवकों के सम्बन्ध में होता है। वह पूरा हम साथी सेवकों को समर्पित नहीं कर सकते, एक साथी सेवक की ही प्रेरणादायक जीवनी को दे सकते हैं। दूसरा अगस्त स्वास्तित्व यज्ञ के सम्बन्ध में है, इस विषय में कुछ लेख दे रहे हैं, स्वास्तित्व में हमारा शरीर और आत्मा दोनों ही आते है। शरीर के सम्बन्ध में एक लेख दिया जा रहा है, कि कैसे शरीर को सन्तुलत आहार से निरोगी रखा जा सकता है, बाकी आत्मा के सम्बन्ध में हैं, जिनको पढ़कर हम अपनी अपनी योग्यता के अनुसार लाभ उठा सकते हैं। यह कठिन विषय है, परन्तु बहुत अवश्यक है, यदि इन लेखों के पाठ से हमारा कुछ भी ध्यान अपने आत्मा की ओर जा सके तो हमारा प्रयास सफल हो सकता है।

साथी सेवकों का सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। परम पू० भगवान देवात्मा के सर्वश्रेष्ठ सम्बन्ध के बाद हमारे लिए यह आवश्यक सम्बन्ध है, क्योंकि पू० भगवान के सच्चे, कर्मठ, त्यागी वा तपस्वी साथी सेवकों के द्वारा ही पू० भगवान का संवाद हम तक पहुंचा है। एक एक कर्मचारी ने सालों धूल भरे मार्गो में पैदल जा जाकर हमें वा हमारे पूर्वजों को पाप वा मिथ्या से निकाला है। कई बार तिरस्कार पाकर भी उन्होंने हमारा भला करना नहीं छोड़ा। वह फरिश्तों की तरह हमारे घरों के चक्कर काटते रहे हैं। उनके अनथक संग्राम से हम पू० भगवान की दुनियां में जीवित हैं।

सच्चे साथी सेवकों का मिल जाना किसी मनुष्य का महा सौभाग्य है। सच्चे साथी सेवक वही हैं जो दूसरों तक गुरू का संवाद तो पहुंचाऐं, परन्तु वह सेवकों कसे अपने साथ न जोड़कर गुरू के साथ जोड़ें। तभी हम गुरू की ज्योति शक्ति पाकर अपना सच्चा विकास साधन कर सकते हैं।

वह साथी सेवक सच्चा साथी सेवक है, जो धर्म र्माग पर हमारी रहनुमाई कर सके। अपने से उच्च योग्यता रखने वालों को श्रद्धा वा सम्मान की दृष्टि से देख सके, अपने साथी सेवकों की उन्नति और उनके द्वारा गुरू के कारज को होते देखकर उसकी सराहना कर सके, तभी हम गुरू के सच्चे शिष्य वा साथी सेवक कहला सकते है। पू० भगवान फरमाते हैं: -

"जो आत्मा जहां तक गहराई से मेरे साथ जुड़ा हुआ हो, वहां तक उसके लिए अवश्यक है कि वह कुल ऐसे जनों को जो मेरे साथ जुड़े हुए हैं, और जिन पर जहां तक मेरा अधिकार हो चुका हो, इज्ज़त और मुहब्बत की आखों से देखे और अपने आपको उनका और उन्हें अपना समझे। परन्तु जिसकी ऐसी गति नहीं, वह मेरा नहीं हो सकता"।

धर्म जीवन

खण्ड 24 अंक 6

जुलाई - अगस्त - 2011

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सुन्दर साध्वी

किसी सच्चे गुणवान व्यक्ति का परिचय पाना, ऐसे व्यक्तियों के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करना, ऐसे व्यक्तियों को हृदय की आखों से निहारना मनुष्य का बहुत बड़ा सौभाग्य है।

जैसे मोती हसों का चोगा बनते हैं, वैसे ही गुणवान व्यक्तियों की सुन्दरता हमारी नेकी की खुराकें बनकर हमारे अन्दरूनी जीवन को संवारती है। मेरे जीवन में श्रद्धा की खुराक बनने वाला एक अति सुन्दर साध्वी का गुणों से भरपूर जीवन रहा है। जिसके गुणों की सुन्दरता आगे झुक कर मेरा बार बार भला हुआ है। उनके गुणों की सुन्दरता आज मैं अपने पाठकों के समक्ष रखकर पवित्र खुशी प्राप्त कर रहा हूँ।

शरीर की सुन्दरता, विशेषकर मुख की सुन्दरता विरले व्यक्तिों को ही विरासत में मिलती है। जिस सुन्दरता की चमक बादलों में बिजली की चमक की तरह भीड़ से अलग दिखाई देती है। चेहरे से यूसफ तो फिर भी देखने में आ जाते हैं, परन्तु ऐसे यूसफी चेहरे बहुत नायाब होते हैं जो यूसफी सुन्दर दिलों के भी मालिक हों। यह कशमीरी सुन्दरता की मूर्ति देवी, यूसफों जैसे सुन्दर दिल की स्वामी थीं। यह इनका निरालापन था।

पहली बार इस देवी के दर्शन आज से लगभग 60 वर्ष से भी अधिक पहले हुए, जब वह 20 वर्ष के लगभग उमर की थी। वह नारी आश्रम के रसोई घर में बैठी थी। यह कोमल कन्या पाकिस्तान में से दुखों के पहाड़ चीरती हुई, थकी हारी भारत पहुंची थी। कुछ समय उसने देव समाज के आश्रम में सहारा पाया। इस वातावरण में अपनी इज्ज़त की सुरक्षा के सामान देखकर, इस आश्रम को ही अपना ठिकाना समझकर सदा के लिए अपना लिया।

यह देवी बिल्कुल अनपढ़ थी, शर्म और झिझक की मूर्ति थीं। वह चुपचाप सेवा करती, समाज की रूह परवर सभाओं में बैठती, परन्तु मुहं से एक शब्द भी नहीं बोलती थी। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे भीष्म और तपस्वी ऐसी देवियों के रक्षक थे। जिनकी छत्रछाया में वह निश्चिन्त जीवन के दिन व्यतीत कर रही थी।

इस देवी की योग्यता बढ़ाने के लिए उनको पढ़ने लगाया गया, अच्छा दिमाग था, जल्दी ही वह हिन्दी पढ़ने वा लिखने लग गई। युनिवर्सिटी की रतन की परीक्षा अच्छे नम्बरों में पास की। उससे अधिक संसारिक उन्नति के लिए आगे पढ़ने को उनका मन नहीं ललचाया। देव समाज के उस समय के महान कर्मचारियों की सभाएं सुन सुनकर, इस देवी का अन्दरूनी रूप भी निर्मल और पवित्र बनता गया। चन्द सालों में ही इस भोली भाली सुन्दर बालिका ने एक गंभीर साध्वी वा गुरू मिशन की प्रचारिका का रूप धारण कर लिया। कई वर्षो बाद अपने सौभागय को महसूस

करते हुए एक सभा में पहली बार जब वह बोली तो मैं उस सभा में हाज़िर था। मैं भी और लोगों की तरह हैरानी से भर रहा था कि सदा चुप रहने वाली कन्या कैसे बोल रही है। और उच्च कर्मचारियों को धन्यवाद दे रही है। ऐसा ब्यान बड़े बड़े पढ़े लिखे भी नही कर सकते। उनके ब्यान को सुनकर एक बज़ुरग पुकार उठे थे कि शेर का शिकार हुआ है जो एक चुप चाप रहने वाली कन्या इस प्रकार सुन्दरता से बोलने के योग्य हुई है। गुरू संगत का जादू उनके भीतर बोल रहा था।

देव समाज के विशेष रूहानी वातावरण ने इस गोरी चमड़ी में उच्च चरित्र की नई जान वा रोशनी भर दी थी, वह इस धरती पर जो जिन्दगी बोझ बन चुकी थी, वह बरकतों की कान बन गई, एक अबला सबला बन गई। समाज में इस देवी का विशेष स्थान बन गया, वह दूसरों की भलाई में निस्सार होने वाली बन गई। उनकी योग्यता दिन पर दिन निख़रती गई वह बहुत प्रभावशाली तकरीर करने वाली प्रचारिका बन गई। दूसरों के लिए अपना सब कुछ निस्सार करने वालों की कतार में खड़ी हो गई।

इतनी हसीन और नेक लड़की के लिए संसारिकता के कितने साधन हो सकते थे, परन्तु उन्होंने किसी ओर भी आकर्षण अनुभव नहीं किया। दुनिया परस्ती को त्याग सच्ची साध्वी का जीवन बसर करने लगी। जवानी में नीच जीवन के आर्कषण मनुष्य को अपनी ओर प्रबलता से खींचते है, उसकी नेकी पर पानी फेर देते हैं। परन्तु इस देवी ने नीच सुखों को पछाड़ कर एक सादा साध्वी का जीवन बसर करने का दृड़ निश्चय कर लिया। 30-32 वर्ष उन्होंने अपने इस प्रण को बख़ूबी निभाया। इस देवी की संसारिकता की दल दल से ऊपर उठकर, नेक जीवन की तस्वीर जब भी आंखों के सामने आती है, तो सिर श्रद्धा से उनके चरणों में बेबस होकर झुक जाता है और ज़ुबान धन्य धन्य पुकारने के लिए, इस तपस्वनी के आगे मजबूर हो जाती है। नीच सुखों की गुलामी बड़े बड़े चतुर जनों की मिटट्ी विरान कर देती है और सरे आम उनके जलूम निकल जाते हैं, परन्तु यह देवी इस गुलामी से मुक्त थी। पवित्रता आपके महान जीवन का सुन्दर भूषण था। तन सुख अनुराग ने कभी आपको पागल नहीं बनाया। बहुत सीमा तक आपने शूरवीरों की तरह उस पर फतह पाई। किसी पुरूष को अपने दिल, दिमाग में छाने नहीं दिया। पुरुषों में रहकर, उनके साथ काम करने पर भी आप किसी कमज़ोरी का शिकार नहीं हुई। आपका यह सुन्दर पहलु पहाड़ों की शिखरों को छूता नज़र आता है। आपके पवित्र रूप के आगे झुककर पवित्रता का पाठ पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त करता रहा हूं। आपका जीवन पवित्रता का चश्मा है। यह और अधिकारी आत्माओं को पवित्रता बांटता रहा है।

धन पदार्थो के मोह से आप आज़ाद थी। धन आदि का मोह आप में नहीं था। लाखों करोड़ों उन जनों से आप महान थी, जिनके भीतर धन का भूत सवार होता है। आपको अपने अधिकार के तौर पर उस समय हज़ारों रू० अचानक प्राप्त हुए। उन्होंने छूना भी स्वीकार नहीं किया, आप के पास बेशक पहले कोई ध न राशि नहीं थी। आपके पिता और भाई वर्तमान थे। उन्हें यह रक्म व अपने लिए और न अपने सम्बन्धि यों के लिए रखने का ख़्याल आया। झट यह रक्म समाज को अर्पण करने के लिए उच्च अधिकारियों को दे दी। और सन्तुष्टि पाई। एक बार रक्म पकड़ा कर फिर कभी याद नहीं किया। ऐसे भूल गई जैसे उनका पैसा नहीं था, कोई हाय, तोबा नहीं की। दान की डींग मारने का भी ऐसी देवी को ख्याल तक नहीं आया। कमाल की उदारता वा धन के प्रति कमाल का वैराग्य भाव था। यह गुण उनके हृदय की और सुन्दरता को दर्शाते हैं, उन्हें करोड़ो जनों से ऊपर उठा देते है। ऐसा त्यागी लोभ लालच से मुक्त, दानी और दीन हृदय

फरिश्तों को ही नसीब होता है।

स्त्रियों को आम तौर पर खाने पीने की ललक होती है। आप इस लालसा से ऊपर थी। रूखा सूखा खाकर सन्तुष्ट रहती थी। बहुत थोड़ा भोजन आपके लिए बहुत बन जाता।

कपड़े या पोशाकें पहनने का कभी शौक नहीं पाला। सादी साफ पोशाक, वा धोती उनका खजाना था। सादे कपड़ों में भी वह बहुत सुन्दर लगती थी। कपड़ों के लिए कभी आकर्षण अनुभव नहीं किया। जेवरों के प्रति कभी आकर्षित नहीं हुई। इन प्रलोभनों से बड़ी आसानी से वह ऊपर उठ गई। ऐसे पदार्थो की धूल भी वह अपने ऊपर नहीं पड़ने देती थी।

श्रद्धा, पवित्रता, हमदर्दी, शुक्रगुजारी की आप मुंह बोलती तस्वीर थी। जब भी उन्हें बिमार स्त्रियों की सेवा का अधिकार मिलता, वह रहिमत के फरिश्ते का रूप धारण कर लेती। पी०जी०आई० जैसे बड़े हस्पतालों में कई 2 महीने नर्सो की तरह बिमारों की सेवा करती रहीं। अपने मरीज़ की ही नहीं बल्कि और मरीजों की सेवा के लिए मजबूर हो जाती। नर्सो का काम सहज कर देती। नर्से उनकी मित्र बन जाती, मरीजों की सेवा में उन्हें रस मिलता था, वह कह देती कि यदि समाज की आज्ञा हो तो मैं हस्पतालों में मरीजों की सेवा करते करते मरूं। जान तोड़कर रात दिन बेग़ानों की सेवा करते हुए देखना उनके लिए सन्मान से भर देता था। वह रहिमत का साकार रूप दिखाई देती। स्त्रियां भी उन्हें बिमारी में सेवा के लिए पुकारती तो वह खुशी खुशी सेवा करती।

आप फरिश्तों की तरह निर्मल वा निष्कपट थी। सीधा साधा स्वभाव, कोई छल कपट नहीं, बड़ा ही कोमल और सुन्दर जीवन।

अंह भाव और मनुष्यों की तरह उनको भी मिला था। उस कारण जब उन्हें थोड़ा भी गुस्सा आ जाता, या कुछ घृणा पैदा हो जाती, परन्तु उस घृणा में कभी द्वेष भाव की गहराई नहीं होती थी।

श्रद्धा से भरकर गुरू महाराज के कारज में सारी उमर लगा दी। उनकी तकरीर, उनके भजन विशेष प्रभाव रखते थे। एक एक गांव में नगर कीर्तन करती, वह बिमार, कमज़ोर हो कर भी गला ठीक न होने पर भी गले में बाजा लटकाए कई कई धण्टे दिवानों की तरह भजन गाती, प्रभातफेरियां करती, यह सब बहुत ही सुन्दर दृष्य होता था। श्रद्धा भाव ने ही आपको गुरू महाराज के मिशन में कुर्बान होने के लिए मजबूर किया और उन्हें वफा का ताज पहनने और शिखरता पर पहुंचने के योग्य बनाया । तिल तिल गुरू मिशन मेंट कर दिया।

धर्म के भावों ने आपको संसारिक सामानों वा संसारिक सम्बन्धियों से भी वैरागनी बना दिया था। दुनियां का कोई बन्धन नहीं था, किसी कमज़ोरी की शिकार नहीं हुई। मोह के बन्धनों से आज़ाद जीवन बसर किया।

आपका जीवन उच्च भावों की सुन्दर महक से भरपूर था। आपका जीवन गुरू के प्रभावों से महकदार हो गया था। ऐसे महक भरे जीवन को देखना और उससे प्रभावित होना नीच जीवन की दुगन्र्ध को छोड़ उच्च जीवन की सुगन्ध को अपनाना किसी किसी के अधिकार में आता है।

आजकल के साथी सेवकें के पवित्र सम्बन्ध के दिनों में ऐसी अन्दर और बाहर से सुन्दर साध्वी के पाक जीवन की पाक महक याद करके हम अपने कठोर हृदयों को सरस करने का सौभाग्य पाने की खुशी पाकर धन्य धन्य अनुभव करने, उन पर फख़र करने की जो अनमोल देन गुरू ने बख़शी है, उसके लिए लाख लाख बार नमन करते हैं।

इस देवी का नाम माननिय शीला जी था।

बलदेव सिंह

स्सास्तित्व यज्ञ

स्वास्तित्व का अर्थ है अपना आप। स्वस्तित्व क्या है, जो कुछ हम हैं जो कुछ हमारी हस्ती है, हमारी हस्ती में हमारा शरीर है और शरीर के भीतर आत्मा है जो हमारा प्रचालक है, हमारे आत्मा में भाव शक्तियां हैं, ज्ञान शक्तियां हैं जो भिन्न भिन्न गतियों द्वारा प्रकाशित होती हैं। इस प्रकार शरीर और आत्मा को लेकर हमारा अस्तित्व है। हम अपने शरीर की रक्षा चाहते हैं, केवल हम ही नहीं पशु-पक्षी, कीड़े-पतंगे भी अपने शरीर की रक्षा चाहते हैं। स्वस्तित्व यज्ञ का यही अर्थ है कि हम अपने शरीर और आत्मा के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करें और उसकी रक्षा करें। परन्तु यह सुनकर वा दिमाग़ी तौर पर जानकर भी कोई मनुष्य अपने शरीर और आत्मा की रक्षा वा विकास कर सकता है? नहीं, उसके अलग नियम हैं जैसे शरीर को यदि खाने पीने को न मिले, तो हम चाहकर भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते। वह बच नहीं सकता।

पहले तो यह जानने की आवश्यकता है कि हम किस की रक्षा करें और किस प्रकार अपने आपको बचाएं। हम स्थूल शरीर रखते हैं, परन्तु क्या इसको भी सदा रख सकते हैं? नहीं रख सकते। यह शरीर मरने के लिए ही है। स्थूल शरीर धारी राजा हो या प्रजा मौत सबके लिए लाज़मी है। इससे आगे क्या है? इस विषय में जो मूर्ख हैं, वह तो अन्ध कार में हैं ही, जो विद्वान, धनवान वा सभ्य हैं, वह भी अन्धकार में हैं। उनके भीतर कई प्रकार की कल्पनाएं हैं, एक यह है कि आत्मा अमर है, परन्तु शरीर नष्ट हो जाता है।

स्वास्तित्व यज्ञ बताता है कि जैसे शरीर के बनने बिगड़ने वा मरने के नियम हैं, उसी प्रकार आत्मा के भी नियम हैं। पहले मनुष्य की समझ यहां तक ही पहुची है कि विकास और विनाश के नियम केवल शरीर पर ही काम करते हैं। परन्तु जैसे शरीर के सम्बन्ध में हम यह दो नियम देखते हैं, उसी प्रकार आत्मा के सम्बन्ध में भी देखना अवश्यक है। एक एक आत्मा अपने नीच कर्मो से दिन पर दिन नीच होता जाता है, वह विनाश को प्राप्त होता है, उच्च गतियों के द्वारा वह विकास पाता है। यह महत्वपूर्ण सचाई को मनुष्यात्मा बिलकुल ही भुलाकर रखते हैं। सारी नेचर में परिवर्तन का नियम काम कर रहा है। उस अनुसार नेचर का प्रत्येक अस्तित्व, छोटे से छोटा वा बड़े से बड़ा परिवर्तित होकर या बेहतर बन रहा है, या बद्तर बन रहा है। यह विश्वव्यापी नियम है, हम शरीर के परिवर्तन को देखते हैं, बचपन, जवानी बुढ़ापा, मौत, उसका कमज़ोर वा बलवान होना, परन्तु आत्मा को उस नियम से ही अलग कर देते हैं। स्वर्ग, नर्क, परलोक आदि के सम्बन्ध में मिथ्या कल्पनाएं की गई हैं, परन्तुेव धर्म, जिसकी शिक्षा विज्ञान पर आधारित है, वह इन कल्पनाओं में विश्वास नहीं रखता, उसकी आत्मा के सम्बन्ध में शिक्षा भी शत्-प्रति शत् विज्ञान पर निर्भर है। यह एक नई रोशनी में ढूडे हुए सत्य हैं। किसी ने आत्मा के सम्बन्ध में यह ज्ञान प्राप्त नहीं किया। जो आत्मा को मानते भी हैं, वह अविनाशी मानते हैं, इसलिए उनके सामने विनाश वा विकास का कोई अर्थ नहीं। विज्ञान मूलक शिक्षा

के अनुसार जो आत्मा विनाशकारी नियमों के अधीन है, यदि उसकी गति नीच है, फिर वह चाहे कुछ भी मानता रहे, वह अवश्य मिट जाएगा। यदि किसी के अन्दर रोग हैं, वह किसी को वह माने या न माने, यदि ईलाज न हो तो वह अवश्य नष्ट हो जाएगा। इसलिए विकास और विनाश के नियम को न समझकर सैंकड़ों आत्मा नष्ट हो रहे हैं।

"जीवन पथ के रहबर के बिन, लाखों विनष्ट होते हैं"

आत्मा वा जीवनी शक्ति जो हमारे अस्तित्व में मुख्य वस्तु है, यदि उसकी रक्षा करनी हो, तो हमें यह पता होना चाहिए कि उसकी रक्षा कहां है और किस प्रकार हो सकती है। यदि कोई आत्मा सात्विक भावों को विकसित नहीं करता, तो उसके भीतर उच्च गति आरम्भ नहीं होती, फिर उसका विनाश लाजमी है। सात्विक शक्तियों को पैदा करके ही हमारी हस्ती की सुरक्षा है अपनी हस्ती में शरीर और आत्मा दोनों का ज्ञान पाना ही अवश्यक है। शरीर का ज्ञान पाना आसान है, क्योंकि वह स्थूल है और हमें दिखाई देता है, उसका सुख दुख हमें अनुभव होता है, परन्तु आत्मा सूक्ष्म है, उसका ज्ञान पाना कठिन है। सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करने के लिए सूक्ष्म विधि की अवश्यकता है। आत्मा क्या है, उसका विकास वा विनाश क्या है, उसकी उच्च गति क्या है, यह ज्ञान बहुत सूक्ष्म और कठिन है, परन्तु यह बहुत मुल्यवान ज्ञान वा बोध है। जब हमारे भीतर कोई बोध पैदा होता है, तो वह हमें किसी वस्तु वा मनुष्य से जोड़ता है। प्यास पानी से जोड़ती है, भूख खुराक से जोड़ती है। अब यदि हमारे भीतर आत्मा के ज्ञान प्राप्ति की भूख होगी तो आत्मा का सत्य ज्ञान प्रदान करने वाले जीवन दाता से जुड़ कर पूरी हो सकती न कि किसी काल्पनिक अस्तित्व की अराधना से।

परम पू० भगवान देवात्मा एक काल्पनिक अस्तित्व नहीं, बल्कि सत्य अनुराग की महा विलक्षण शक्तियां लेकर आर्विभूत हुए हैं। सत्य अनुराग की रोशनी में उन्होंने आत्मा के रूप के सम्बन्ध में विज्ञान पर आधारित सत्य ज्ञान खोजा है। आत्मा क्या है, कैसे बनता वा बिगड़ता है कैसे जिन्दा रह सकता, कैसे विनष्ट होता है, यह सचाईयां नेचर के अटल नियमों, पर आधारित उन्होंने मानवता को दी हैं, इसलिए उनके भीतर ही यह समर्थ्य है कि वह मनुष्य की आत्मा के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्ति की अकांक्षा को पूर्ण कर सकें। मनुष्य आत्मा सुखों के अन्धकार में इस प्रकार लिप्त है कि उसके भीतर आत्मा के विषय में, नीच वा उच्च गतियों के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा ही नहीं। पानी का स्त्रोत चाहे पास हो, परन्तु कोई पीना ही न चाहे, वैसे ही देवात्मा सत्गुरू का पता लग जाने पर भी, उनके निकट रहकर भी, उनके सेवक वा कर्मचारी बनकर भी यदि यह अभिलाषा पैदा न हो तो आत्मा का विनाश अवश्यम्भावी है। अभिलाषा पैदा होने पर भी, जीवन दाता की शरण में आकर भी लगातार रहिनुमाई और रक्षा के लिए लगातार अधीन रहने की अवश्यकता है, तभी नीच गतियों से रक्षा और उच्च गतियों में विकास हो सकता है।

"जीवन तत्व क्या है, उच्च गति वा नीच गति क्या है, नेचर क्या है, भिन्न भिन्न जगतों से हमारा सम्बन्ध क्या है? जो यह सारा ज्ञान पाने का इच्छुक है, उसके लिए देवात्मा रंचित पू देवशास्त्र

भाग – 3 के अध्ययन की आवश्यकता है।"

स्वास्तित्व यज्ञ किसी के लिए तभी सफल हो सकता है, यदि यज्ञ के इन दिनों में उपरोक्त रहस्य को जानने के लिए धर्म जीवन दाता के सम्बन्ध में जो ज्ञान है, उस को प्रयाप्त मात्रा में पा लिया जाए, उसकी गहराई तक जाया जाए।

जो उच्च जीवन दाता है, उनका बाहर के आकार को ही न देखा जाए, उनके आत्मा के रूप के की महिमा नज़र आए, उनके साथ जीवित सम्बन्ध स्थापन हो। उनसे हितकारी कोई सम्बन्धी दिखाई न दे। देव स्तोत्र के गान में यह अनुभव हो कि उसमें उनके रूप की अलौकिक महिमा छुपी हुई है। ऐसा करने से उनके रूप के सम्बन्ध में श्रद्धा उत्पन्न होती है, और श्रद्धा के विकसित और गहरा होने से कोई जन उनके रूप के साथ जुड़कर, उनको मूल सम्बन्धी अनुभव करके, उनसे योग करके उनकी ज्योति और शक्ति को पाने का अधिकारी बनता है।

सधारणत: मनुष्यत्माओं में पू० भगवान से योग होना कठिन है। उनकी ज्योति और शक्ति सत्संगों उनके द्वारा रचित पुस्तकों वा उच्च जीवन धारी आत्माओं की संगत से कुछ न कुछ प्राप्त हो सकती है, जो हमें अपने विषय में ज्ञान पाने में सहायक होती है। परन्तु देवात्मा के साथ सम्बन्ध बनाने से जो लाभ प्राप्त होते हैं, वह बिल्कुल अलग और अनोखे हैं। सेवकों का कर्मचारियों वा सहायकारियों से वास्ता पड़ता है, इस प्रकार उनका आपस में लगाव वा सम्बन्ध बन जाता है, परन्तु धीरे धीरे वह देखने के योग्य नहीं रहते है कि सबसे बढ़कर लगाव के योग्य कौन है। कई बार एक एक कर्मचारी से जुड़कर और देवात्मा के साथ न जुड़कर सेवकों की विनाशकारी गति आरम्भ हो जाती है। कर्मचारी ही सेवकों की असल अध्यात्मिक उन्नति में दिवार बन जाते हैं। मनुष्य उनका पक्षपाती बन जाता है और धीरे धीरे जीवन मार्ग से भटक जाता है। मूल सम्बन्धी से कट जाता है। अपने जीने के विषय में ज्ञान पाने का लक्ष्य लोप हो जाता है। मूल सम्बन्धी (देवात्मा) यदि नहीं मिले, केवल उनसे निकला कोई अंश ही मिला है, तो उससे मूल के रूप में नहीं ढल सकते।

यह जानना बड़ा कठिन है कि हम मूल सम्बन्धी के निकट हो रहे हैं कि नहीं। इसका सबूत यह है कि देखें वह कौन सा बोध है, जो पहले नहीं था, अब पैदा हुआ है।

तुम उनके सेवक कहलाते हो, पर उनके जीवन ब्रत के लिए क्या करते हो, कौन सा हितकर काम उनके नमित्त दिन भर में आपके जीवन से निकलता है। स्वास्तिव यज्ञ के दिनों में ऐसा विचार पैदा होना चाहिए, अपनी असल अवस्था को देखने का प्रयत्न करना चाहिए, अपनी अवस्था की परीक्षा करनी चाहिए, जिससे अपनी हीनता का बोध हो, जो कुछ गुरू के सम्बन्ध से तुम्हारा हित हुआ है, उसका पता लगे, उससे बचने की प्रतिज्ञाएं की जाएं। इस पहलु में अपनी उदासीनता पर दुख हो। इस सबके लिए परम पू० भगवान देवात्मा जो जीवन दाता है, के साथ योग करके उनकी ज्योति शक्ति को पाने की अवश्यकता है, तभी यह यज्ञ सफल हो सकता है।

मनुष्यात्मा के पतन का सत्य ज्ञान वा सत्य बोध

(अत्मिक पतन का पहला लक्षण)

(पी०वी०कनल)

मुबारक हैं वह जन जो भगवान देवात्मा के दरबार में आए हुए हैं। उनको सबसे बड़ा यह दान मिला है कि वह धर्म के सम्बन्ध में सब मिथ्या विश्वासों से छुटकारा पा जाते हैं। मिथ्या की काली घटाओं से निकल कर सत्य ज्ञान के पथ के राही बन जाते हैं। यह सत्य है कि मिथ्या विश्वासों की काली घटाओं से निकल आते हैं, मूल वाक्य के सत्य विश्वासी होकर जब आत्मिक सत्य ज्ञान की राह पर कदम रखते हैं, तब प्रश्न यह उठता है, कि इस राह के मुसाफर होकर कहां तक वह इस राह को तय करने की जन्मजात योग्यता रखते हैं। देवज्योति को पाने का द्वार तो सब देव समाजियों के लिए खुला रहता है, पर यह क्यों होता है कि एक जन तो श्रीमान देवात्व सिंह जी बन जाते हैं या पंडित हर नारायण जी बन जाते हैं, दूसरे जन साधारण से साधारण सत्यों को समझने वा ग्रहण करने की समर्थ्य नहीं रखते। एक जन तो भाई मोहन देव जी की तरह ज्योति पा लेते हैं, दो ढाई महीने की संगत के बाद वह संसारिक लाभों पर लात मानकर परोपकार के कठिन पथ पर अपना कदम जा रखते हैं और 40 वर्ष से भी अधिक समय तक उस परोपकार के मार्ग पर स्थिर रहकर और भगवान देवात्मा के चरणों में स्थूल देह त्याग करते हैं। पर और कई जन भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर कई वर्षों तक सेवक रहकर अपने गुरू देवात्मा से ही कट जाते हैं और पाप जीवन में ही अपनी उमर गुजारते हैं।

भगवान देवात्मा की प्रगट की हुई सचाई को पढ़ना एक बात है, पर उसे उपलब्ध करना और उस पर बलिहार जाना बिल्कुल अलग बात है। भगवान देवात्मा के प्रगट किए हुए किसी सत्य को समझना और बात है, परन्तु उसमें छुपी हुई महा सुन्दरता को अनुभव करना, उसके सम्बन्ध में लेख लिखना और लेख लिखते समय गद्‌गद हो जाना बिल्कुल और बात है। एक एक जन के लिए यह आसान हो जाता है वह सभा करवा देवे, वा कई सभाएं करवा दे, परन्तु भगवान देवात्मा के सत्यों वा तत्वों पर कोई उच्च कोटी की किताब लिखना और बात है। एक एक जन की सारी उमर देव समाज में कट जाती है, पर न वह किसी अच्छे स्तर का लेखक बनता है, न अच्छे स्तर का प्रचारक। इसलिए जन्मजात योग्यता बहुत बड़ी विशेषता है। ज्यों ज्यों योग्य जन भगवान देवात्मा के सेवक बनते जाऐगे, त्यों त्यों सत्य ज्ञान के पाने और फैलाने के अधिकारी पैदा होते जाएगे, नहीं तो नहीं।

आत्मिक पतन किसे कहते हैं? किसी भली दशा से बुरी दशा में पहुंच जाना, पतन कहलाता है। अब प्रश्न यह है कि हम कैसे जाने कि किसी जन का आत्मिक पतन हो रहा है। भगवान देवात्मा ऐसे ही किसी प्रश्न के उत्तर में फरमाते हैं :-

"मनुष्यात्मा का पतन चार प्रकार के बड़े बड़े लक्षणों से जाना जा सकता है, उनमें से एक यह है - आत्मिक कठोरता और उसके द्वारा उनमें आत्मिक अन्धकार वा अन्धता की उत्पत्ति"

अब स्वभाविक ही यह प्रश्न उठता है कि आत्मिक कठोरता क्या है? भगवान देवात्मक की शिक्षा के आधार पर इसका उत्तर यह है कि मनुष्यात्मा

की अन्धता की अवस्था ही आत्मिक कठोरता का दशा कहलाती है।

अब प्रश्न यह है कि आत्मिक अन्धता क्या है? आत्मिक सत्यों को दधखने की योग्यता को पूरी तरह खो देने की हालत या दशा को आत्मिक अन्धता की दशा कहते हैं।

अब नेचर में जो एक विचित्र नियम काम कर रहा है, उसका नाम विकास विषयक नियम है। विकास विषयक नियम को भंग करने की दशा को आत्मिक पतन या विनाश की दशा कहते हैं। जब कोई नीच सुखों की तृप्ति करते करते उनका अनुरागी वा दास बन जाता है और उन सुखों की प्राप्ति को ही अपना लक्ष्य समझता है और अपनी विविध प्रकार की गतियों के द्वारा विविध प्रकार की मिथ्याओं और विविध प्रकार के अहितों की उत्पति करता है, तब उसके लिए यह लाज़मी हो जाता है कि वह नेचर के विकास के नियम को भंग करे। ज्यों ज्यों ऐसा जन विकास के नियमों को दिनों दिन भंग करता रहता है, त्यों त्यों वह इस योग्य ही नहीं रहता कि अपना आत्मिक विनाश देख सके। इस कठोरता के उत्पन्न होने से न केवल एक एक जन अपनी आत्मिक पतन की भयानक दशा को देखने के अयोग्य हो जाता है, पर उसके अन्दर देव ज्योति के प्रवेश का मार्ग भी बन्द हो जाता है। देव ज्योति के प्रवेश करने से ही अधिकारी आत्मा उन अमुल्य सत्यों को देख सकते हैं कि जो आत्मा के रूप, उसके रोगों और उसके पतन की दशा, उस पतन की दशा से उसकी सत्य मोक्ष और उच्च विकास की अवश्यकता के साथ सम्बन्ध रखते हैं। ऐसे कुल सत्यों और तत्वों से अज्ञानी होना या अन्धकार में रहना आत्मिक अन्धकार कहलाता है।

अब ऐसे अन्धकार ग्रस्त आत्मा को यदि किसी सभा में बिठाया जाए और उनके सामने आत्मिक गूढ़ सत्यों का प्रकाश किया जाए, तो वह ऐसा ही होगा, जैसे अन्धे के सामने शीशा रखना। ऐसे जनों को यदि कोई सत्य ज्ञान दायक पुस्तक पढ़ने को दी जाए और वह पढ़ भी लें, तो भी उन्हें अपने मिथ्या विश्वासों का मिथ्यापन दिखाई नहीं देगा, इस पुस्तक का बार बार पाठ करके भी वह अन्धे के अन्धे ही रहेंगे।

ऐसे आत्मिक अन्धकार ग्रस्त जनों के लिए सत्य मोक्ष का द्वार इसलिए नहीं खुल सकता कि वह अपने आपको नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के दास रहकर भी बीमार या रोगी नहीं समझते। वह अपने किसी आत्मिक पतन से कोई कष्ट अनुभव नहीं करते, उल्टा सुख महसूस करते हैं। ऐसे जन आत्मिक पतन और आत्मिक मृत्यु के प्रेमी कहलाते है। ऐसे जनों की ऐसी अवस्था कितनी भयानक!

देवात्मा फरमाते हैं : –

मनुष्य के अन्दर सुख के लिए प्रबल अनुराग और दुख के लिए घृणा वर्तमान है। प्रत्येक मनुष्य प्रतिदिन सुख को प्राप्त करना और दुख से बचना चाहता है, चाहे उसका कोई सुख अनुराग या दुख से उत्पन्न उसकी कोई घृणा उसके अपने या अपने अतिरिक्त किसी और के लिए कैसी ही हानिकारक क्यों न हो। इसलिए ऐसी हालत में उसके लिए अपने और औरों के सम्बध में विविध प्रकार से हानिकारक बनना एक अवश्यक बात है।

आत्मिक पतन का पहला वा दूसरा लक्षण

आत्मिक सत्य ज्ञान पाने के वही जन अधिकारी हो सकते हैं, जो आत्मिक पतन का सत्य ज्ञान पा सकते हैं। आत्मिक पतन के लक्षणों का सत्य ाान पा सकते हों। जैसे पहले लेख में बताया गया है आत्मिक पतन का पहला लक्षण आत्मिक अन्धता वा आत्मिक कठोरता है।

अत्मिक पतन का दूसरा लक्षण, जो पहले से भी अधिक भयानक है, उसका नाम उल्टी दृष्टी है। उल्टी दृष्टी किसे कहते हैं? इसका उत्तर पू० देव शास्त्र के आधार पर यह है:-

किसी मनुष्य के आत्मा में ऐसी दृष्टी का पैदा हो जाना, कि जिससे वह नेचर की नाना बातों को उल्टे रूप में देखता हो, उल्टी दृष्टी कहलाती है। ऐसी उल्टी दृष्टी रखने वाले जन नेचर के जड़ पदार्थो को स्वप्न वा असत्य मानते हैं और कुल शक्तियों को जड़ ही मानते हैं। ऐसे उल्टा दृष्टा जन अपने अस्तित्व को एक मात्र सत्य और पूर्ण नेचर का अंश नहीं मानते, जबकि उनका सारा वजूद ही नेचर का एक अंश है। वह नेचर के अस्तित्व अर्थात माता पिता से पैदा हुआ हैं। नेचर के ही विविध अस्तित्वों की सहायता से वह जीता और जी सकता है, जबकि वह नेचर के विकास विषयक और जीवन वर्द्धक नियम को भंग करके अपने अस्तित्व का पतन करता है। ऐसे पतन के जारी रहने से वह नाश को प्राप्त होता है। भौतिक, वनस्पति और पशु और मनुष्य जगतों के अस्तित्वों की सहायता से ही वह जिन्दा रहे हैं। फिर भी उनके लाखों, करोड़ों अनुयायी उल्टा दृष्टा होकर यह मानते रहे कि उनका जन्म माता पिता दोनों से नहीं हुआ और न नेचर के अस्तित्वों की सहायता से उन्होंने जीवन बिताया है। ऐसे उल्टा दृष्टा यह नहीं मानते कि मनुष्यतात्मा की सफलता नेचर के विकास विषयक शुभ कारज में सेवाकारी होने में है। इस उल्टी दृष्टी के कारण करोड़ों मनुष्य आत्मा निकम्मे रहने में अपनी हानि देखते हैं। धन सम्पति बढ़ाने में अपना और अपनी ज़रूरतों के लिए भी धन खर्च करना अपनी हानि समझते हैं। अपना सारा धन अपनी पत्नी वा अपनी सन्तान को देने में लाभ और परोपकार में देने में अपनी हानि समझते हैं। ऐसे जन अपने विविध प्रकार के सुखों की प्राप्ति के निमित्त विविध प्रकार की मिथ्या, कपटता, विश्वास घातकता और नाना प्रकार की अन्याय और अत्याचार मूलक क्रियाएं करने में अपने आत्मिक जीवन की कोई हानि नही समझते, उल्टा ऐसा करने में बहुत बड़ा लाभ अनुभव करते हैं। यही कारण है कि संसार में मिथ्या, कपटता, विश्वास घातकता, अन्याय और अत्याचार मूलक क्रियाओं की भरमार है।

ऐसे उल्टा दृष्टा करोड़ों जन विविध प्रकार के सुखों के बोधी और अनुरागी होकर शुभ के विरूद्ध उन सब सुखों की प्राप्ति को ही अपना सत्य लक्ष्य देखते हैं कि जो सत्य लक्ष्य नहीं है। ऐसे उल्टा दृष्टा जन अपने आत्मा के सम्बन्ध में अबोधी और अज्ञानी होकर भी ऐसे जनों को अबोधी और अज्ञानी समझते हैं, कि जो देव ज्योति को पाकर सत्य धर्म के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने के योग्य हो चुके हैं। ऐसे उल्टा दृष्टा जन अपने किसी सच्चे उपकारी और हितकारी से अपने किसी मिथ्या और पाप मूलक क्रिया के विरूद्ध कोई उपदेश सुनकर उसके प्रति इस कदर घृणा भाव से भर जाते हैं, कि वह ऐसे हितकारी को अपना शत्रु, और उन जनों को अपना मित्र समझते हैं जो उनके आत्मा के पतन के मूल कारण होते हैं। पंडित देव रत्न का भगवान देवात्मा ने क्या बिगाड़ा था? 24 वर्ष उनके शरीर और आत्मा की पालना की। वह स्वंय लिखते रहे कि परम पू० भगवान देवात्मा के उन पर

उपकार हैं। जब वह पू० भगवान के चरणों में आए, वह एक अनपढ़ नौजवान थे। भगवान देवात्मा ने उनको अच्छा लेखक बनाया, भगवान देवात्मा ने उनको अच्छा प्रचारक बनाया। एक स्वार्थी को बदलकर देव समाज का कर्मचारी बनाया। भगवान देवात्मा ने उन्हें ऐसी बात से रोका, जिससे उनके आत्मा का पतन हो रहा था और उनका पतन हो भी गया था। उससे चोट खाकर पू० भगवान के शत्रु बन गए।

अब्दुल गफूर उर्फ धर्म पाल का भगवान देवात्मा ने क्या बिगाड़ा था? उसको पाप जीवन से निकाल कर देव समाज का सेवक बनाया था। उस मुसलमान नौजवान के भीतर पर सेवा का इतना जोश भर दिया था कि वह ब्रहमचारी बनकर देव समाज के स्कूल में बड़े त्याग से सेवा करने वाला बन गया। अंह पर चोट खाकर उसने विकास पाते पाते विनाश की गति ग्रहण कर ली। जिस जीवन दाता ने उसे जीवन दान दिया था, उन्हीं का पक्का शुत्रु बन गया। देव समाज का अब्दुल गफूर आर्या समाज का धर्म पाल बन गया। फिर उसके आत्मा की जो दुर्गति हुई, वह शिक्षा प्रद कहानी है। यह उल्टा दृष्टा होने का वचित्र दृष्टांत है।

राय साहिब झांगी राम का पू० भगवान ने क्या बिगाड़ा था? उनको शराबी, कबाबी वा बदचलनी की बुरी हालत से अपनी संगत से निकाला। अवारागर्दी से निकाल कर उनको परिश्रमी बनाया। उनके हृदय में कई गुण पैदा किए, जिनके कारण वह अपने अफसरों की नज़र में कीमती वजूद बन गए। हज़ारों रू० जमा करने के योग्य हो गए। उनको राय साहिब बनने का अधिकारी समझा गया। अव्वल दर्जे का ईमानदार समझा गया। परन्तु जब उनको अधिकारियों की ओर से रोक टोक हुई, वह शत्रु बन गए, उल्टा दृष्टा बनकर अपनी उमर के आख़री वर्ष देव समाज के काम को मिटाने में खर्च किए। स्वंय पतन और विनाश के मार्ग पर पड़ गए।

ऐसे उल्टा दृष्टा जन घमंड भाव से उत्तेजित होकर अपने हितकारी वजूदों को अपने से घटिया समझने लगते हैं, जो वास्तव में उनसे बड़े और योग्य होते हैं। जन यह सहन नहीं करते कि उनके सामने बड़ों की महिमा गाई जाए। मैंने एक नौजवान को अपने पास रखकर पढ़ाया, उसे दसवीं पास करवाई, फिर मैं उसे अपने साथ कालिज में ले गया। मैं बी०ए० पास की थी और वह फसट ईयर का विद्यार्थी था। वह बिचारा बहुत घमंडी था। एक दिन मेरे से किसी बात पर ख़फा हो गया और कहने लगा कि तुम किस बात में बड़े हो? कुछ किताबें पढ़कर तुमने बी०ए० पास कर ली, ऐसे बहुत बी० ए० इस दुनियां में फिरते हैं। मैंने बहुत शान्ति से उसे कहा कि मैं तेरा अध्यापक हूं, तुझे यह भी नज़र नहीं आता? उल्टा दृष्टा जन किस कदर कृपा - पात्र!

देवात्मा फरमाते हैं :-

याद रखो, मनुष्य जिस जिस प्रकार के झूठ का जानबूझ कर व्यवहार करता है और किसी नाम से भी झूठ की पालिसी को उचित समझता है, वह सख़्त गुमराह है और जो जन किसी के बारे में किसी झूठे इलज़ाम (अभियोग) पर जानबूझ कर या बिना प्रमाण के विश्वास करता है, वह भी बहुत बड़ी आत्मिक हानि करता है, अर्थात उससे उसके आत्मिक जीवन का पतन होता है।

हर अंग की अलग जरूरत

शरीर के लिए पौष्टक खुराक जरूरी है, लेकिन व्यस्त जीवनशैली के कारण समय की कमी का खामियाजा सेहत को भुगतना पड़ता है। इससे बचने के लिए मल्टीविटामिंस का सेवन करके शारीरिक तंत्र को दुरूस्त रखा जा सकता है।

ब्रिटेन में ज्यादातर लोग विटामिन डी की कमी से पीड़ित होते हैं क्योंकि ठंड से बचने के लिए वे ज्यादातर समय घरों के अंदर ही बिताना पसंद करते हैं। सूरज की उचित रोशनी न मिल पाने के कारण ही शरीर में विटामिन डी की कमी होती है। डायटिशियन और न्यूट्रिशनिस्ट डॉ० फ्रैंकी फिलिप्स कहती हैं कि मल्टीविटामिंस शरीर के लिए इसलिए जरूरी होते हैं, क्योंकि प्रत्येक अंग की जरूरत अलग-अलग होती है। आइए जानते हैं कि कौनसा सप्लीमेंट शरीर के किस हिस्से के लिए और क्यों जरूरी है।

हड्डियां :- कैल्शियम और विटामिन डी करीब 15 अध्ययनों के अवलोकन में पाया गया है कि उम्र बढ़ने पर हड्डियों को होने वाले नुकसान को कैल्शियम सप्लीमेंट्स से धीमा किया जा सकता है। आमतौर पर रजोनिवृत्ति के बाद महिलाओं की हड्डियां कमजोर होने लगती हैं। ऐसे मे कैलिशयम व विटामिन डी के सप्लीमेंट्स साथ लेने से शरीर इनका अवशोषण बेहतर तरीके से कर पाता है। डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ के अनुसार इनका रोजाना 1500 मि०ग्रा० का सेवन करना ही चाहिए। वहीं अमेरिकन नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज के मुताबिक रोजाना कैल्शियम और विटामिन डी की क्रमश : 1200 मि०ग्रा० व 1500 मि०ग्रा० मात्रा का ही सेवन करना चाहिए, क्योंकि इससे अधिक डोज पेट दर्द या डायरिया का कारण बन सकता है।

मस्तिष्क : विटामिन डी मानव मस्तिष्क की कार्यप्रणाली सुचारू बनाए रखने में विटामिन डी बहुत जरूरी होता है। मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी द्वारा करीब 3000 लोगों पर करवाए एक शोध के अनुसार विटामिन डी सप्लीमेंट्स से अल्जाइमर याद भूलने की बीमारी की आशंका कम होती है। विशेषज्ञ कहते हैं कि भोजन में विटामिंस की मौजूदगी से स्मरणशक्ति तेज होती है और पोषक तत्वों से दिमाग तक पहुंचने वाले सिग्नल्स में भी तेजी आती है। द डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ के अनुसार विटामिन डी सप्लीमेंट्स का सेवन 65 वर्ष के बाद, छह से पांच वर्ष के बच्चों, गर्भवती महिलाओं, स्तनपान करवाने वाली माताओं और काली रंगत वाले लोगों को जरूर करन चाहिए।

पाचन तंत्र : आर्टिचोक और पीपरमेंट ऑइल जर्मनी की यूनिवर्सिटी ऑफ एसेन के शोध से सामने आया है कि आर्टिचोक (सरजमुखी की प्रजाति का पौधा, जो उत्तरी अमेरिका में मिलता है।) पाचन-तंत्र को दुरूस्त करता है। रोजाना इसकी 320 मि०ग्रा० मात्रा का दो बार सेवन करना लाभकारी है। वहीं द ब्रिटिश मेडिकल जर्नल के शोधा से पता चलता है कि पीपरमेंट ऑइल से बाउल सिंड्रोम की समस्या 57 फीसदी तक हल हो सकती है। रोजाना इसकी 500-600 मि०ग्रा० मात्रा का सेवन आदर्श है।

किडनी : विटामिन बी6 और क्रेनबैरी भरपूर पानी और विटामिन बी6 किडनी को स्वस्थ बनाने के लिए जरूरी है। लगातार 14 वर्षो तक करीब 85 हजार महिलाओं पर किए शोध में पाया गया कि जो महिलाएं रोजाना 40 मि०ग्रा० विटामिन बी6 का सेवन करती हैं, उनमें किडनी स्टोन्स का खतरा 60 फीसदी तक कम होता है। वहीं क्रेनबैरी सप्लीमेंट्स या जूस से यूरिनरी ट्रैक और किडनी संबधित संक्रमणों का खतरा कम किया जा सकता है।

फर्टिलिटी : विटामिन सी व जिंक न्यूजीलैंड स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ ऑकलैंड के शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन में पाया कि भोजन में भरपूर एंटीऑक्सीडेंट्स जैसे विटामिन सी व ई, एल-कार्निटिन, जिंक और मैग्निशियम जैसे तत्वों को शामिल कर पुरुषों में लो स्पर्म काउंट की समस्या को दूर किया जा सकता है। वहीं डीएचईए नामक एंटी-एजिंग हार्मोन से महिलाओं में गर्भधारण करने की क्षमता बढती है और वे स्वस्थ बच्चे को जन्म देती हैं। डीएचईए की रोजाना 75 मि०ग्रा० मात्रा का सेवन आदर्श है।

हृदय : ओमेगा-3 ऑइल्स यूरोपियन जर्नल ऑफ क्लीनिकल न्यूट्रिशन में छपी एक रिपोर्ट से पता चलता है कि ओमेगा-3 ऑइल्स हृदय के लिए बहुत फायदेमेंद है। ये फैटी एसिड शाकाहारियों के लिए अलसी में पाया जाता है। इसमें ट्राइग्लिसराइड्स नामक फैट का स्तर कम होता है, जो हृदय रोगों व मधुमेह का खतरा बढ़ाता है। इसकी रोजाना 1000 मि०ग्रा० मात्रा का सेवन करने से सुधार आता है। ध्यान रहे कि ओमेगा-3 का हाई डोज डॉक्टर की अनुमति के बगैर न लें।

त्वचा: कैरोटिनॉइड्स ल्यूटेन और जीजैंथिन नामक केमिकल्स को कैरोटेनॉइड्स करते हैं, जो हरी पत्तेदार सब्जियों में पा जाते हैं। इससे त्वचा का टेक्सचर सुधरता है। इटली स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ नेपल्स द्वारा 120 महिलाओं (इनकी त्वचा पर उम्र से पहले ही झाइयां आ गई थीं) पर शोध किया गया। इस दौरान इन्हें रोजाना ल्यूटेन की 10 मि०ग्रा० मात्रा का सेवन करने की सलाह दी गई, जिससे उनकी त्वचा 38 फीसदी हाइड्रेट हो गई थी और त्वचा मे आठ फीसदी कसावट आ गई थी। गाजर में यह बहुत मात्रा में होता है।

आंखें: विटामिन सी, ई व जिंक अमेरिकाके नेशनल आई इंस्टीटचूट के एक शोध से सामने आया कि आंखों की तेज रोशनी के लिए एंटीऑक्सीडेंट्स जैसे विटामिंस, मिनरल्स व अन्य पोषक तत्व जरूरी हैं। द एज रिलेटेड डिसीज (एआरईडीएस) स्टडी से सामने आया कि एंटीऑक्सीडेंट्स से फ्री रेडिकल्स की निर्माण प्रक्रिया बाधित होती है, जो बढ़ती उम्र के प्रभावों के लिए जिम्मेदार होते हैं।

उम्र बढ़ने के साथ जब रक्त वाहिकाएं ऐसी जगहों पर विकसित होने लगती हैं, जहां उन्हें नहीं होना चाहिए, तो रेटिना पर बुरा असर पड़ता है और नजर कमजोर होने लगती है। इसलिए रोजाना 500 मि०ग्रा० विटामिन सी, 400 आईयू विटामिन ई, 15 मि०ग्रा० बीटा कैराटिन, 80 मि०ग्रा० जिंक और 2 मि०ग्रा० कॉपर का सेवन करना चाहिए। हालांकि, बीटा-कैरोटिन के अधिक सेवन से त्वचा की रंगत पीली पड़ने और धूम्रपान के आदी लोगों में लंग कैंसर का खतरा भी बढ़ता है।

मसले हल करो सही जगह पर

दो किसानों के खेत मिले हुए थे। उनके बीच एक 'मेड़' का झगड़ा होा गया। हर एक कहता था कि मेड़ मेरी है। दोनों खेत की मेड़ पर लड़ गए। यह झगड़ा पहले 'मेड़' का था फिर वह 'मूंछ' का मसला बन गया। हर एक को दिखाई देने लगा कि मेड़ से हटना लोगों की नजर में अपने आपको बेइज्जत करना है।

इसलिए झगड़ा बढ़ता रहा। झगड़ा बढ़ा कि दोनों तरफ कत्ल हुए, खेत काटे गए। दोनों ने एक दूसरे की चीजें जलाई। मामला और बढ़ा यहां तक कि पुलिस और अदालत तक जा पहुंचा। मुकदमा बाजी का लंबा सिलसिला शुरू हो गया। ये मुकदमा 20 साल बाद उस वक्त खत्म जबकि उनके खेत, बाग जेवरात सब बिक गए। एक मामूली मेड़ को पाने के लिए दोनों ने अपना सब कुछ खो दिया। यही मेड़ का झगड़ा एक और किसान के साथ पेश आया। मगर उसने तुरंत आग-बबूला होकर कोई कार्रवाई करने के बजाए मामले पर गौर किया। अखिर उसकी समझ में यह बात आई कि मेड़ का झगड़ा मेड़ पर तय नहीं होता। झगड़े को तय करने की जगह-दूसरी है। यह सोच कर उसने झगड़े की मेड़ छोड़ दी।

उसने तय किया कि मसले पर आज से सोचने के बजाए पीछे से सोचना शुरू किया। मेड़ की घटना से उसके दिल को भी चोट लगी थी। उसे भी अपने नुकसान और अपनी बेइज्जती से वही तकलीफ हुई, जो हर इंसान को ऐसे वक्त पर होती है, मगर उसने अपनी भावना पर नियंत्रण किया। तुरंत जोशीली कार्रवाई करने के बजाए सोच-विचार कर कदम उठाने का फैसला किया। मेरी मेड़ पर मेरे दुश्मन को कब्जा करने की हिम्मत ही कैसे हुई? इस सवाल पर विचार करते करते वह इस नतीजे पर पहुंचा कि इसका कारण दुश्मन के मुकाबले में मेरी कमजोरी है। मेरा और प्रतिपक्ष का मामला दरअसल यह है कि मेरी स्थिति इतनी मजबूत नहीं है कि वह मुझसे दब कर मेरे अधिकार क्षेत्र पर सर उठाने की हिम्मत ने करे। ठंडे दिमाग से सोचने के बाद उसकी समझ में यह बात आई कि अगर वह अपनी ताकत और हैसियत को बढ़ा ले तो वह ज्यादा आसानी से अपने दुश्मन के मुकाबले में कामयाब हो सकता है, क्योंकि तब उसके दुश्मन को उस पर जबरदस्ती करने की हिम्मत नहीं होगी।

अब उसने अपने खेत पर पहले से ज्यादा मेहनत शुरू कर दी। जो ताकत वह अपने दुश्मन का बर्बाद करने की कोशिश में खर्च करता उसी ताकत को खुद उसने अपने निर्माण में लगाना शुरू कर दिया। इस नई चेतना ने उसके अंदर एक नया हौसला जगा दिया। वह न सिर्फ अपने खेतों में ज्यादा मेहनत करने लगा बल्कि खेती के साथ कुछ और संबंधित कारोबार भी शुरू कर दिया। इस नई चेतना का नतीजा यह हुआ कि उसने अपने जीवन को दुबारा शुरू से व्यवस्थित करना शुरू कर दिया। वह खर्च को कम करके और आमदनी को ज़ोर से बढ़ाने की तरफ ध्यान देने लगा। साथ ही उसने अपना पूरा ध्यान अपने बच्चों की शिक्षा की ओर लगा दिया। उसने तय कर लिया कि अपने हर बच्चे को सर्वोच्य और सर्वोत्तम शिक्षा दिलाएगा।

इस दूसरे किसान को भी अपनी कोशिशों मे बीस वर्ष लग गए। पहली व्यक्ति ने बीस साल में खुद को बर्बाद कर लिया था, जबकि दूसरे किसान

के लिए बीस साल वरदान साबित हुए। इस बीस साल में उसके बच्चे पढ़-लिखकर अच्छे और ऊंचे पदों पर जा पहुंचे थे। उसने अपनी खेती इतनी बढ़ा ली थी कि उसके यहां हल बैल के बजाए टैक्टर चलने लगा था। जिस किसान से उसका मेड़ के लिए झगड़ा हुआ था, उसने मेड़ समेत उसका सारा खेत खरीद लिया था। जिस आदमी ने मेड़ का झगड़ा मेज पर तय करने की कोशिश की वह तबाह हो गया। उसके प्रतिकूल जिसने मेड़ छोड़कर दुश्मन का पूरा खेत उसके कब्जे में आ गया।

बिजली का बल्ब जलते-जलते बुझ जाए या पंखा चलते-चलते रुक जाए तो हम बल्ब को तोड़ कर नहीं देखते, न पंखे से उलझते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि बल्ब बुझने और पंखा रुकने की वजह उसके अंदर नहीं बाहर है। और फिर जहां से फर्क पड़ा हो, वहां से ठीक करके बल्ब और पंखे को दुबारा चलाते हैं। इंसानी मामले भी अक्सर इसी तरह के होते हैं। मगर अजीब बात यह है कि बल्ब और पंखे के मामले में जो बात आदमी कभी नहीं भूलता उसी बात को इंसानी मामले में हमेशा भूल जाता है।

आदमी की यह आम कमजोरी है कि जब भी उसकी जिंदगी में कोई मसला पैदा होता है तो वह उसी मकाम पर अपना सिर टकराने लगता है, जहां से मसला पैदा हुआ है। हालांकि अक्सर हालात में यह होता है कि मसला कहीं पैदा होता है, और उसकी वजह कहीं और होती है। एक मामले में किसी की ज्यादती अक्सर हालात में किसी और मामले में पाई जाने वाली एक स्थिति के कारण घटित होती है। ऐसी स्थिति में बेहतरीन अकलमंदी यही है कि घटनास्थल से व्यक्ति अपना सिर न टकराए बल्कि असली कारण को मालूम करके बात को वहां बनाने की कोशिश करे जहां बात बिगड़ जाने की वजह से उसके साथ वह हादसा पेश आया है, जिसमें आज वह खुद को फंसा हुआ पाता है।

(मौलाना वहीदुद्दीन खान इस्लाम के विश्वप्रसिद्ध विद्वान है।)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

श्री अकबरपुर की यात्रा

28 - 4 - 2011, लखनऊ :- श्रीमान जगदीष प्रसाद जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी 12.30 बजे लखनऊ पंहुचे। श्रीमान देवकी नन्दन जी की गाड़ी उन्हें लेने पहले ही स्टेशन पर पहुंच चुकी थी। बहुत सत्कार के साथ वह घर ले गए और बावजूद बहुत कमज़ोर सेहित के श्रीमान रूपचन्द जी ने फूलों के हारों से धर्म सम्बन्धियों का स्वागत किया।

8.30 बजे सभा की गई, जो श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इस बात पर जोर दिया कि मनुष्य को उच्च मण्डल वा सत्संग की अति अवश्यकता है, दूसरा कोई रास्ता नहीं। यदि सत्संग आपके स्थान पर पहुंचता है, तो ठीक है, नहीं तो हमें सत्संग पर पहुंचने के हालात बनाने चाहिए कई बार स्वंय दिल सत्संग का चाहवान नहीं होता, परन्तु संगत मिल जाने पर बहुत खुशी और सन्तुष्टि होती है। जैसे कई दिन के प्यासे वा भूखे इन्सान को खुराक मिल जावे तो नई ताकत महसूस होती है, उस प्रकार से सच्ची संगत के प्रभावों से नई ताकत, नई दृष्टि और नई समझ आ जाती है।

29 - 4 - 2011, सुबह 8 बजे यह सभा विजय कुमार जी सिंगला के घर करवाई गई। यह सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। श्रीमान जगदीष जी ने सुन्दर भावों से भजन का गान किया। उन्होंने बताया कि शीशे में हम अपने चेहरे को देखते हैं और उसे संवार लेते हैं। यदि शरीर में कोई बिमारी हो तो X-Ray वा लेज़र की किरणों, अल्ट्रा - साऊंड और अन्य साधनों से हम पता लगाकर ईलाज करवा सकते हैं, परन्तु आत्मिक बिमारियां केवल देव ज्योति में ही दिखाई दे सकती हैं। खेलों के इंर्चाज सुरेश कलमाडी - टू - जी सपैकट्रम के घपले के मुख्य अरोपी ऐ राजा और यू०पी०के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री तिवारी जी की उदाहरणें देकर समझाने का प्रयत्न किया गया कि बाहर से सफल दिखाई देने वाले व्यक्ति, अन्दर से कितने लाचार वा दुर्बल होते है। न चाहकर कितना अपमानित होना पड़ता है, दुख और बदनामी सहनी पड़ती है। बाहर की प्राप्तियों और सफलताओं की सार्थकता के लिए मनुष्य को परम पू० भगवान देवात्मा की देव ज्योति की प्राप्ति बेहद ज़रूरी है, नहीं तो जहां सुख अनुराग है, वहां ख़तरा है। पू० भगवान के असर सच्ची रहनुमाई करते हैं।

लखनाऊ से 11 बजे श्रीमान देवकी नन्दन जी ने अपनी गाड़ी द्वारा श्री अकबरपुर पंहुचा दिया। श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने पावन हवेली के दर्शन करवाए। चण्डीगढ़ और पदमपुर से 5 जन पहले ही वहां पहुंच गए थे। श्रीमान मधुसूदन जी, श्रीमान चमन लाल जी, श्रीमान डा० मुन्शा सिंह जी, श्रीमान गोपाल कृष्ण जी, श्रीमान प्यारा सिंह जी पहुंचे हुए थे। शाम को 5.30 बजे सभा रखी गई। यात्रियों ने पावन भूमि पर नतमस्तक होकर अपने भावों की तृप्ति की। पावन हवेली और गुरू महाराज के जन्म स्थान के दर्शन जैसे उच्च भावों से भरकर श्री चौहान जी ने करवाए, वह खुशी से सबके मन झूम रहे थे। हवेली की सुन्दरता वा सफाई देखकर धन्य धन्य अनुभव किया।

5.30 बजे शाम :- यह सभा श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने करवाई। श्रीमान जगदीष जी ने उच्च भावों से ओत प्रोत होकर "मेरे भगवन तुम्हारे बिन, नहीं कोई ठिकाना है" नामक भजन का गान किया। अधिकारी जन उच्च मण्डल से प्रभावित होकर अश्रु बहा रहे थे। सभापति जी ने इस देव भूमि की महिमा गहरे भावों से ब्यान की। वहां के निवासियों के

और सेवाकारियों के महा सौभाग्य का वर्णन किया। यात्रियों का फूलों के हारों से स्वागत किया। बहुत ही स्पष्ट रूप से विकास के नियम की व्याख़्या की। कैसे नैबूला से लेकर अब तक विकास के नियम ने सफर तय किया है। विकास क्रम की महानतम वा उच्चतम देन पूर्ण शुभ वा सत्य अनुरागी देवात्मा का आर्विभाव करना है और मनुष्य जगत के सर्वोच्च कल्याण के द्वार खोलना है। नेचर की विकासकारी शक्तियों ने देवात्मा के मिशन में जो भिन्न भिन्न समय अनुकूल घटनाएं और सहायता प्रदान की है, उसका भी सुन्दर भावों वा जोश से वर्णन किया। मनुष्य सही मायनों में इन्सान देवात्मा के असरों से ही बन सकता है। दृष्टांत द्वारा इसको स्पष्ट किया।

30 - 4 - 2011, सुबह 8.30 बजे यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि देव धर्म और अन्य धर्मो में क्या अन्तर है। ईश्वरवादी धर्म विज्ञान को कोई महत्व नहीं देते। आम प्रचलित धर्म मत सम्बन्धियों को माया कहकर तिरस्कार करते हैं। सम्बन्धों को जीवन में रोक समझते हैं। सम्बन्धों को त्याग करने की शिक्षा देते हैं। देव धर्म सम्बन्धों को माया नहीं हक़ीक़त समझता है। सम्बन्धों में ही जीवन का भला वा बुरा होता है। उच्च भावों द्वारा व्यवहार करके मनुष्य अपना सच्चा भला कर लेता है या जीवन का विकास कर लेता है। स्वार्थ वर्द्धक नीच भावों द्वारा परिचालित होकर जो व्यवहार होते हैं, उससे जीवन का नाश होता है। हमदर्दी, कृतज्ञता, और श्रद्धा द्वारा उच्च व्यवहार वा सेवा करने से सुन्दर दृष्य पैदा होते हैं। इसके सुन्दर दृष्य पेश किए गए। शुक्रगुज़ारी की उदाहरणें प्रस्तुत की गई। कई जनों ने उच्च प्रभाव दायक मण्डल को महसूस किया और अपनी खुशी प्रगट की।

30 - 4 - 2011, शाम 8 बजे यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। श्रीमान जग़दीष प्रसाद जी ने भजन गाया। श्री सभापति जी ने परम पू० भगवान देवात्मा की सम्बन्ध तत्व शिक्षा का वर्णन करते हुए माता पिता और बच्चों के सम्बन्ध का वर्णन किया। श्रद्धा भाजन कौन होते हैं, और हमारे माता पिता श्रद्धा भाजन क्यों हैं। माता पिता का विशेष महान रूप, विशेष विशुद्ध प्यार वा कुर्बानी, त्याग के सुन्दर दृष्टांत द्वारा अंकित किया गया। उपस्थित जन प्रभावित हो रहे थे। सन्तान को किसी सूरत में भी नाशुकरे और कृतघन्न नहीं बनना चाहिए। सभा के अन्त में श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने माता पिता सम्बन्धी आए परिवर्तन का सुन्दर ढंग से ब्यान किया।

1 - 5 - 2011, सुबह 8.30 बजे यह सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। भजन का गान किया गया फूलों द्वारा परम पू० भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन किया गया, देव स्तोत्र का गान वा व्याख़्या के बाद श्री सभापति जी ने बताया कि मनुष्य का वजूद शरीर और आत्मा युक्त है। नेचरके प्रत्येक अंश में परिवर्तन का नियम जारी है, उस द्वारा नेचर का प्रत्येक अस्तित्व बदल रहा है। नेचन सदा से है, यह और सदा रहेगी? यह समझ इस प्रकार आ सकती है कि नेचर को बनाने वाला कोई नहीं। नेचर के नियम अटल है, इसलिए नेचर सदा भरोसे के योग्य है। निरपक्ष है। परम पू० भगवान देवात्मा सच्चे ईष्ट देव क्यों हैं? पूजा से क्या भाव है? परम पू० भगवान देवात्मा की पूजा का मकसद देवप्रभावों की प्राप्ति है। यह सारा ब्यान बहुत स्पष्ट और रोचक था। देव प्रभावों द्वारा पैदा हुए कुछ क्रिश्में पेश किए गए। सभा के बाद 4 जनों ने अपने भावों का प्रकाश किया।

भाव प्रकार निम्नलिखित जनों ने किया।

1) श्रीमान किशन सिंह जी चौहान :- बहुत

प्रभावशाली सभाओं के लिए श्रीमान जी का धन्यवाद करता हूं। माता पिता के उपकारी रूप के दर्शन करवा दिए। यात्रियों के आने से बहुत सुन्दर मण्डल बना है। इस दर पर आकर ही सच्चे प्रणाम का साधन करने का पता लगता है।

2) श्रीमान सुभाष कुमार जी शर्मा :- यही सच्चा दर है, जहां माता पिता का उपकारी रूप नज़र आता है। मेरे माता पिता कुछ महीने पहले ही परलोक सिधार गए, यदि वह आज वर्तमान होते तो उनका सम्मान वा सेवा के वलवले जो उनके बाद पैदा हुए हैं, तो तृप्त किए जा सकते थे और मैं अपना सच्चा भला कर सकता था। मेरे बच्चे आज्ञाकारी हैं। पू० भगवान की बहुत कृपा है। मैं यात्रियों की उतनी सेवा नहीं कर सका, जितनी मैं चाहता था। श्री चौहान जी सदा मुझे ताजा किए रखते हैं।

3) मैडम शुक्ला जी :- मैंने सभाओं से बहुत लाभ उठाया है। पूरी पढ़ाई में कृतज्ञता की कुछ समझ नहीं आई थी। इन सभाओं में कृतज्ञता की कुछ सच्ची समझ आई है। मेरे भीतर यह प्रेरणा पैदा हुई है, जिसको अपनी सह-अध्यापिकों से discuss किया है। सभा में बताना नहीं चाहती। उन संकल्पों को पूरा करने पर सबके सामने रखूंगी। सभाओं में बहुत ज्ञान और उच्च प्रेरणाएं मिली है।

4) मैडम गुप्ता जी :- मेरे 28 वर्ष के बच्चे का अचानक देहान्त हो गया था और मैं बहुत निराश हो गई थी। जिन्दगी ख़त्म करने को दिल करता था। इन असरों से जीने की आशा जागी है। सेहत खराब होने के बावजूद सभाओं में शामिल होती रही हूं। जीने के अर्थ मिले हैं। सभापति जी का विशेष रूप से धन्यवाद करती हूं।

2-5-2011 श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और जगदीष प्रसाद जी, 7.30 बजे लखनऊ पहुंच गए और 8.30 बजे विजय कुमार जी सिंगल के घर सभा की गई। इसका विषय था कि उच्च असरों और देव असरों में क्या अन्तर है। जहां उच्च असर जीवन के लिए ज़रूरी है वहां आत्मिक दुनियां देव असरों के बिना नहीं खुल सकती। देव असरों के बिना अपने परिचालिक भावों का ज्ञान नहीं हो सकता, उनके द्वारा जो आत्मिक परिवर्तन पैदा होता है, उसका ज्ञान नहीं होता। देव असरों के बिना सच्ची आत्मिक मोक्ष और विकास की न समझ आ सकती है और न प्राप्ति हो सकती है। इसकी इच्छा भी पैदा नहीं हो सकती। दृष्टांतो के द्वारा उपरोक्त तथ्य कुछ समझ आ सकते हैं।

2-5-2011 शाम 7.30 बजे :- यह सभा भी श्रीमान विजय कुमार जी के घर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। देव धर्म की दूसरे धर्मो से क्या विशेषता है। देव धर्म विज्ञान मूलक धर्म है। जहां दूसरे धर्म मत सम्बन्धों को त्यागने की महिमा महसूस करते हैं। अपने कर्तव्यों को सम्बन्धों में पूरी लगन से पूरा करना धर्म की क्रियाएं हैं। देव धर्म की बुनियाद इसकी प्रथम श्रेणी में प्रवेश करने की चार प्रतिज्ञाएं हैं। मिथ्या विश्वासों सें मोक्ष पाए बिना, झूठे संस्कारों, पापों से मुक्ति पाए बिना कोई जन देव धर्म की दहलीज पर पैर भी नहीं रख सकता। पापों को छोड़ने के बाद उनके विकारों से शुद्धि ही सच्ची शुद्धि है। आत्मा का सच्चा ज्ञान और कल्याण। देव धर्म से बाहर सम्भव नहीं है। कई सुन्दर उच्च परिवर्तन ब्यान किए गए। श्रीमान देवकी नन्दन जी ने अपने भावों का प्रकाश किया कि वह महोत्सव पर अच्छी हाज़री के साथ योग देंगे।

एक हाजरीन

WPP - Regd. Postal No.Pb (0077) 2006 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सत्य धर्म बोध उत्सव

आपको यह जानकर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव 2 सितम्बर से 4 सितम्बर 2011 तक धर्मशाला सैक्टर 18 – डी, चण्डीगढ़ में चाव भाव से मनाया जा रहा है। इस मुबारक उत्सव से पहले चन्द दिन का खास सत्संग रखा जा सकता है। 2 सितम्बर की शाम 5.00 बजे सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा होगी।

आपकी सेवा में विनम्र प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं इस शुभ अवसर से लाभ उठावें बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी साथ लावें।

प्रोग्राम

2 सितम्बर शुक्रवार

प्रवेश सभा : 5:00 बजे शाम
विषय : सत्य धर्म की विशेषता।
सभा से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें।
अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

3 सितम्बर शनिवार

पहली सभा : 8.00 बजे सुबह
विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।
दूसरी सभा : 10:00 बजे
विषय : स्वास्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।
तीसरी सभा : 5.00 बजे
विषय : भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज।

4 सितम्बर इतवार

पहली सभा : 8.00 बजे सुबह
विषय : भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज, इस सम्बंधी हमारी जिम्मेवारियां। इस कारज के लिए धन और जन की अपील।
दूसरी सभा : 10.00 बजे
विषय : सभाओं से उठाए लाभ का यात्रियों की ओर से वर्णन।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts